सं ग्रो.वि./एफ.डी./154-85/37460.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. राज फाऊंडरी एण्ड मकाद कास्टिंग, प्लाट नं० 368, सैक्टर-24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री डाल चन्द तथा उसके श्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोडोगिक विवाद है;

ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रीहोगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई एक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारीं ग्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पहते हुए ग्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :---

क्या थी डाल चन्द की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं;तो वह किस राहत का हक दार है?

सं. ग्रो वि /एफ डी./ 154-85/37467 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राथ है कि मैं. राज फाऊण्डरी एण्ड मकाद कास्टिंग प्लाट नं 368 सैक्टर-24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री नरेन्द्र वहादुर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय. हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिवित्यम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविस्चना स. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिविस्चना सं. 1495-जी.-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिविस्चना की धारा 7 के ग्रिवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीवावाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नोचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री नरेन्द्र बहादुर की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिमांक 12 सितम्बर, 1985

सं भ्रो.वि/एफ.डी./133-85/3770.1.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. फरीदाबाद फाऊंडरी प्लाट नं. 306, मैंक्टर 24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री जय राम वर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, यब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 196 8 के साथ पढ़ते हुए श्रधिसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदांबांद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या आ जय राम वर्मी की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

न. या व./एफ.डो./133-85/37708. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. फरीदाबाद फाऊंडरी प्लाट नं. 306, सैक्टर 24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री गिरधारी लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रीडोगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री गिरधारी लाल की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?